दिनांक 02-08-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

विदेश में ईश्वरीय सेवा का महत्व

बापदादा उन बच्चों से खास मिलन मनाने आते
जो जहान के नूर और नयनों के सितारे कहलाते

बापदादा के नयनों में ऐसे बच्चे ही समाए रहते
ऐसे बच्चों के नयनों में भी बाप ही समाए रहते

सेवाधारी ऐसे बच्चे जग के लिए ज्योति समान
ऐसे बच्चों के बिना दुनिया लगती जंगल समान

समय आ गया बच्चों तुम ऐसी अवस्था बनाओ
कुछ भी देखो लेकिन बाप को नयनों मैं समाओ

सदा यही अनुभव करो सारा संसार बना असार
मुर्दों से कुछ भी पाने का ना आए मन में विचार

इच्छा मात्रम अविद्या बन एक के रस में समाओ
सब कुछ बाप से पाकर एकरस स्थिति बनाओ

सेवा के लिए निकालते रहो नए नए अविष्कार
बाप को प्रत्यक्षता करने का स्वप्न करो साकार

उमंग उत्साह जगाकर ईश्वरीय सेवा को बढ़ाओ
कुम्भकर्णी नींद में सोई आत्माओं को जगाओ